कैसे मनाएं सच्ची दीवाली

भारत देश विश्व के महानतम् एवं प्राचीनतम् देशों में से एक है। यहां तीज-त्योहारों की एक अनुपम व अविरल परम्परा रही है। एक कहावत के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि यहां सात वार नौ त्योहार अर्थात् हर दिन कोई न कोई अनुष्ठान मनाया जाता है। भले ही समय के साथ मनुष्य भौतिकवादी होता गया है व उसकी सोच भी उसी के अनुरूप परिवर्तन होती चली गयी लेकिन इन सबसे आध्यात्मिकता के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। वस्तु स्थिति तो यह कि आज के समय में आध्यात्मिकता का महत्व कुछ अधिक ही बढ़ गया है।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह जानने की अत्यधिक आवश्यकता है कि यह पर्व हमारे लिए कौन सा दिव्य संदेश अपने आंचल में समेटे हुए लाता है। हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि यदि उस भाव को समझकर हम दीपमाला बनाएंगे तो अवश्य ही हमारा स्वयं का जीवन प्रकाश समान धवल व श्रेष्ठ बन जाएगा।

पर्व देते हैं मानवता को आध्यात्मिक संदेश

भारत देव भूमि में मनाए जाने वाले सभी पर्व अपने आप में बहुत गुह्या रहस्य समाए हुए होते हैं, समूची मानवता के लिए आध्यात्मिक संदेश लिए हुए होते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम उस बात को जानें स्वयं को उसके अनुरूप ढालने का प्रयत्न करें। यदि हम ऐसा करेंगे तो अवश्य ही समस्त धरा की कालिमा व हमारे सभी भाई-बंधुओं की मानसिकता व समाज, देश में सर्वत्र व्याप्त अंधेरा सदाकाल के लिए दूर हो जाएगा। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है जलाएं दीये पर रहे ध्यान इतना अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए। हम अभी बाहर के दीपक तो जला देते हैं, मिठाई भी बांट लेते हैं, फुलझड़ियां भी छोड़ देते हैं, लेकिन इन सबका गुह्या रहस्य क्या है? क्या दीपावली पर इतना भर कर लेना ही पर्याप्त है? क्या एक दिन ही दिवाली मनाएं अथवा हमारा समस्त जीवन दीपावली के उजाले के समान चमकीला, पारदर्शी एवं साफ-स्वच्छ हो?

अंधेरा मिटे कैसे, उजाला हो कैसे?

आज सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की है कि हम अपने मन की गहराइयों में झांककर देखें। बाहर के तम को मिटाने के लिए तो मोमबत्ती जला देते हैं लेकिन मन के अंधकार को मिटाने के लिए तो ज्ञान रूपी दीपक को जलाने की आवश्यकता है। उस दीपक में निरंतर ज्ञान श्रवण का घृत भी पड़ता रहे तथा समर्थ विचारों व सकारात्मक चिन्तन भी सदैव चलता रहना चाहिए। वास्तव में देखा गया है कि आज दुनियां में लोगों के मन में नकारात्मक प्रवृत्तियों रूपी आंधी से आत्मा रूपी दीये को बचाने के लिए सकारात्मक चिन्तन भी सदैव चलता रहे। वास्तव में लोगों के मन में नकारात्मक प्रवृत्तियों, ईर्ष्या, द्वेष,

घृणा, क्रोध आदि विकार भरे पड़े हैं, जो कि आत्मा रूपी दीपक की ज्योति को उत्तरोत्तर कम करते रहते हैं। इसके लिए हमें स्व-मन को प्रभुचिंतन, शुभचिंतन एवं कल्याणकारी चिंतन से भरना पड़ेगा। जैसे बत्ती जलाते ही अंधेरा स्वतः ही समाप्त हो जाएगा।

आजकल हर ओर दुनिया में ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण व अनेक प्रकार के अन्य प्रदूषण पहले से ही व्याप्त हैं। इस पर फुलझड़ियां पटाखे तो उस प्रदूषण के स्तर को और ही बड़ा देते हैं तथा पहले से ही परेशान जीवन में बीमारियों व विकारों में अभिवृद्धि करते हैं। वास्तव में इस दीपावली पर यदि हम संकल्प करें कि हमें अपने मुख से सदैव फूल समान कोमल, मीठे व मधुर बोल ही बोलने हैं, सभी के लिए अपने में आत्मिक प्यार की जाग्रति करनी है, सभी हमारे अपने है और कोई भी तो पराया नहीं है। सचमुच हमारे मन में यदि ऐसी भावना जाग्रत हो जाए तो समस्त धरा पर अपने आप ही रामराज्य की स्थापना हो जाएगी। शांति का वास भी सभी के मन में स्वतः ही हो जाएगा।

लक्ष्मी की पूजा ही न करें, बल्कि पुरषार्थ भी करें

दीवाली पर लोग धन की देवी की पूजा करते हैं, उस दिन घर-बाहर सभी स्थानों को साफ करते हैं। ऐसी मान्यता है कि जो घर सबसे ज्यादा स्वच्छ होगा धन की देवी उसी घर में निवास करेगी। इसका आध्यात्मिक भाव यह है कि यहां कोई स्थूल धन की बात नहीं है बल्कि संतोष, शांति, शक्ति, सामर्थ्य कि बात है लेकिन इससे भी अधिक अपने मन रूपी घर में कोई विकार, कोई बुरी वृत्ति, कोई लगाव, कोई झुकाव तो नहीं है, इसको भी जांच करने की नितांत जरुरत है। यदि हमारा मन निर्मल, शीतल व आनंदित रहता है तो अवश्य ही हम लक्ष्मी समान पदवी को प्राप्त कर सकेंगे। अंत में हम यही कहेंगे कि इस दीवाली पर स्वयं से कुछ प्रतिज्ञाएं करें, कुछेक प्रश्न मन ही मन में पूछें कि क्या हमने अपने स्वयं के मन को प्रभु ज्ञान के दीपक से आलोकित किया है? क्या हम सभी को आत्मिक भाव से प्रेम, स्नेह से भरी वाणी बोलते हैं? क्या हमारा अंतर्मन साफ व स्वच्छ है? हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि यदि उपरोक्त सभी गुण हमारे जीवन में आ जायें तो जरूर ही हम सच्ची दीवाली भी मनायेंगे और दीवाली जैसी धवल दुनिया में जाने के निमित्त भी बन जाएंगे।

ब्र.कु. अवतार , माउंट आबू

*****